Vol 7, Issue 5, 2024 **Impact Factor: 5.099** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2024.7.5.7312

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं का अध्ययन

(Study of Nutrition-related Issues in Ayodhya District, Uttar Pradesh)

[1] शालिनी सिंह

शोध छात्रा, अर्थशास्त्र एवम् ग्रामीण विकास विभाग,
डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या (यू. पी.)

[2] डॉ. मृदुला मिश्रा

प्रोफेसर,अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग
डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या (यू. पी.)

[3] शिव कुमार मौर्या

शोध छात्र अर्थशास्त्र एवम् ग्रामीण विकास विभाग,
डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या (यू. पी.)

सारांश: इस अध्ययन का उद्देश्य 2019-2021 की अवधि के दौरान उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करना और उनके प्रमुख कारणों की पहचान करना है। अयोध्या जिले में बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों के बीच कुपोषण, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी और पोषण संबंधी असमानताएं प्रमुख समस्याएं हैं। बच्चों में कुपोषण के कारण बौनेपन, कमज़ोरी और कम वजन की उच्च दर पाई जाती है। गर्भवती महिलाओं को अपर्याप्त पोषण और प्रसवपूर्व देखभाल की कमी से समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, जैसे गरीबी और शिक्षा की कमी, पोषण समस्याओं को बढ़ावा देती हैं। इस अध्ययन में डेटा संग्रह, विश्लेषण और स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग (एसईएम) के माध्यम से इन समस्याओं का गहन विश्लेषण किया गया है। इसके परिणामस्वरूप, नीति निर्माताओं के लिए सिफारिशें प्रदान की गई हैं ताकि पोषण संबंधी समस्याओं का प्रभावी समाधान किया जा सके।

Keywords: पोषण (Nutrition), सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients), कुपोषण (Malnutrition), अयोध्या जिला (Ayodhya District)

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

परिचय

उत्तर प्रदेश, भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य, पोषण संबंधी समस्याओं के मामले में एक गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। पोषण असंतुलन न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि समाज के आर्थिक और सामाजिक विकास को भी बाधित करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 2019-2021 की अवधि के दौरान उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करना और इन समस्याओं के प्रमुख कारणों का पता लगाना है।

उत्तर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश में स्थित अयोध्या जिला, पोषण संबंधी असंख्य चुनौतियों का सामना करता है, जिनका इसके निवासियों के स्वास्थ्य और कल्याण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र होने के बावजूद, जिला विभिन्न मुद्दों से जूझ रहा है जो इष्टतम पोषण में बाधा डालते हैं, जिससे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों जैसी कमजोर आबादी प्रभावित होती है।

अयोध्या में प्राथमिक पोषण समस्याओं में से एक बच्चों में कुपोषण ***(वीर, 2015)*** का उच्च प्रसार है। पौष्टिक भोजन की अपर्याप्त पहुंच, खराब भोजन प्रथाएं और अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल कई बच्चों में बौनेपन, कमज़ोरी और कम वजन की समस्याओं में योगदान करती है। प्रारंभिक बचपन के दौरान कुपोषण (***गुड़टे, 2014***) के दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं, जिसमें शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास में कमी, संक्रमण के प्रति कम प्रतिरोध और बाद में जीवन में पुरानी बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि शामिल है।

अयोध्या में गर्भवती महिलाओं को भी पोषण संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे मां और बच्चे दोनों के लिए प्रतिकूल परिणाम सामने आते हैं। अपर्याप्त मातृ पोषण ***(श्रीवास्तव, 2013)*** के परिणामस्वरूप जन्म के समय कम वजन, समय से पहले जन्म और नवजात शिशुओं में विकासात्मक समस्याएं हो सकती हैं। जागरूकता की कमी और प्रसवपूर्व देखभाल तक सीमित पहुंच इन समस्याओं को बढ़ाती है, जिससे गर्भवती माताओं को गर्भावस्था के दौरान आवश्यक पोषक तत्व और उचित पोषण ***(श्रीवास्तव, 2012)*** के बारे में जानकारी नहीं मिल पाती है।

एक और महत्वपूर्ण चिंता अयोध्या में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी की व्यापकता है। खराब आहार विविधता और गरिष्ठ खाद्य पदार्थों तक सीमित पहुंच आवश्यक विटामिन और खनिजों, जैसे कि आयरन, विटामिन ए और आयोडीन की कमी में योगदान करती है। ये कमियाँ एनीमिया, ख़राब प्रतिरक्षा कार्य और विकास संबंधी देरी सहित कई स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती हैं।

अयोध्या के भीतर सामाजिक-आर्थिक असमानताएं भी पोषण समस्याओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। गरीबी, शिक्षा की कमी और सीमित आर्थिक अवसर कई परिवारों की पौष्टिक भोजन खरीदने और उन तक पहुंचने की क्षमता में बाधा डालते हैं। इससे कुपोषण का चक्र कायम हो जाता है, क्योंकि सीमित संसाधनों वाले परिवार अक्सर सस्ते लेकिन कम पौष्टिक भोजन विकल्पों का सहारा लेते हैं।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अयोध्या में पोषण संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों और समुदाय को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। पोषण संबंधी इन समस्याओं का समाधान करने के लिए पहल को विविध और पौष्टिक खाद्य पदार्थों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए कृषि प्रथाओं में सुधार, उचित पोषण और स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं पर शिक्षा को बढ़ावा देने और बेहतर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना चाहिए।

भारत की विशाल जनसंख्या और विविधता वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश प्रमुख है। यहाँ गरीबी, खाद्य असुरक्षा, ***(अली, 2012)***अपर्याप्त पोषण शिक्षा, स्वच्छता, स्वच्छता और लैंगिक असमानताएँ आम चुनौतियाँ हैं। इन कारकों का कुपोषण पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे बच्चों और वयस्कों दोनों की स्वास्थ्य स्थिति प्रभावित होती है। इस प्रकार, एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो इन विभिन्न कारकों का विश्लेषण और समाधान कर सके। हमारे अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित है:

- उत्तर प्रदेश में पोषण समस्याओं की व्यापकता और प्रकार का आकलन करना।
- कुपोषण के प्रमुख निर्धारकों की पहचान करना।

साहित्य की समीक्षा

अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट होता है कि ये समस्याएँ वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर कुपोषण के मुद्दों से काफी मेल खाती हैं। अयोध्या जिले में बच्चों की पोषण संबंधी स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए मिश्रा और पांडे (2018) के अध्ययन का संदर्भ लिया जा सकता है, जिसमें कुपोषण के तीन प्रमुख सूचकांकों - स्टंटिंग, अंडरवेट और वेस्टिंग का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि कुपोषण व्यापक रूप से फैला हुआ है और कई कारक इसमें योगदान देते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण -4 (NFHS-4) के अनुसार, अयोध्या सहित उत्तर प्रदेश में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में लगभग आधे स्टंटेड (उम्र के हिसाब से कम लंबाई), 40% कम वजन वाले (उम्र के हिसाब से कम वजन) और 18% वेस्टेड (लंबाई के हिसाब से कम वजन) हैं। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि अयोध्या में कुपोषण एक गंभीर समस्या है जो बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करती है।

कुपोषण के इस उच्च स्तर के पीछे कई सामाजिक, आर्थिक और मातृ कारक होते हैं। माताओं की शैक्षिक स्थिति, घरेलू आर्थिक स्थिति, स्वच्छता, और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच जैसे कारकों का बच्चों की पोषण संबंधी स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मिश्रा और पांडे (2018) ने अपने अध्ययन में मल्टीलेवल यादृच्छिक अवरोधन लॉजिस्टिक प्रतिगमन मॉडल का उपयोग कर यह पाया कि मातृ और घरेलू स्तर के कारकों को समायोजित करने के बाद भी कुपोषण के स्तर में काफी कमी नहीं आई। यह संकेत देता है कि कई अन्य कारक भी हो सकते हैं जो कुपोषण को प्रभावित करते हैं और जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

डेटा संग्रह

डेटा संग्रह का चरण हमारे अध्ययन का आधार है। इसमें हम विशेष रूप से अयोध्या जिले के संदर्भ में प्रश्नावली के माध्यम से डेटा एकत्र करते हैं। प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा संग्रह के लाभ हैं कि यह हमें प्राथमिक स्रोत से विस्तृत और सटीक जानकारी प्रदान करता है। इसके लिए हम निम्नलिखित कदम उठाते हैं:

1. **नमूना चयन:** अयोध्या जिले के विभिन्न गांवों और शहरों से एक प्रतिनिधि नमूना चयन करते हैं। यह सुनिश्चित करते हैं कि नमूना जनसंख्या का एक सही प्रतिनिधित्व हो।
2. **डेटा का संकलन:** एकत्रित डेटा को संकलित करते हैं और किसी भी त्रुटि या असंगति को दूर करते हैं।

प्रश्नावली का विकास

प्रश्नावली में विभिन्न पोषण संबंधी प्रश्न होंगे जो निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर करेंगे

- व्यक्तिगत और परिवारिक जानकारी
- आहार और पोषण संबंधी आदतें
- स्वास्थ्य स्थिति और चिकित्सा इतिहास
- स्वच्छता की स्थिति
- आर्थिक स्थिति और खाद्य सुरक्षा

हमारे अध्ययन में शोध पद्धति को चार मुख्य चरणों में विभाजित करते हैं: डेटा संग्रह, डेटा विश्लेषण, मॉडलिंग और निष्कर्ष।

डेटा संग्रह

डेटा संग्रह का चरण हमारे अध्ययन का आधार है। इसमें हम विभिन्न प्रमुख स्रोतों से डेटा एकत्र करते हैं, जैसे:

ये स्रोत हमें विस्तृत और विश्वसनीय डेटा प्रदान करते हैं जो उत्तर प्रदेश (अयोध्या जिले) में पोषण समस्याओं की व्यापकता, प्रकार और वितरण को समझने में मदद करते हैं।

डेटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण चरण में हम एकत्रित डेटा का विस्तृत विश्लेषण करते हैं। इसके लिए हम विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करते हैं, जैसे:

- **वर्णनात्मक सांख्यिकी:** यह हमें डेटा का संक्षिप्त सारांश प्रदान करती है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

- **सांख्यिकीय परीक्षण:** विभिन्न समूहों और समयावधियों के बीच अंतर की पहचान करने के लिए।

इस चरण में हम डेटा की सफाई और मानकीकरण भी करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमारे विश्लेषण के परिणाम विश्वसनीय और मान्य हों।

विश्लेषणात्मक उपकरण स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग (एसईएम)

हमारे अध्ययन का मुख्य विश्लेषणात्मक उपकरण स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग (एसईएम) ***(लिटिल,2024)*** है। एसईएम हमें विभिन्न कारकों के बीच जटिल संबंधों को मॉडल करने, सैद्धांतिक मॉडल का परीक्षण करने, माप त्रुटि का हिसाब लगाने, और मध्यस्थता और मॉडरेशन प्रभावों का आकलन करने की अनुमति देता है।

एसईएम का उपयोग करके, हम निम्नलिखित कदम उठाएंगे:

- मॉडल का विकास: कुपोषण के संभावित निर्धारकों और उनके बीच संबंधों की पहचान करना।
- मॉडल का परीक्षण: विभिन्न सांख्यिकीय परीक्षणों का उपयोग करके मॉडल की वैधता और विश्वसनीयता का मूल्यांकन करना।
- मॉडल का परिष्करण: आवश्यकतानुसार मॉडल में सुधार करना और इसे और अधिक सटीक बनाना।

अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याएं

अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याएं ***(पांडे,2024)*** विभिन्न पहलुओं से उत्पन्न होती हैं। इस जिले में कुछ क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा की कमी होने के कारण लोगों को पोषण विकार जैसे कमजोरी, रक्ताल्पता, और दस्त जैसी समस्याएं होती हैं। खासकर गरीब और गरीबी रेखा से ऊपर के लोगों को पोषण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, स्थानीय खाद्य पदार्थों की कमी भी पोषण संबंधी समस्याओं का कारण बनती है, जिससे लोगों को आवश्यक पोषण तत्वों की कमी होती है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

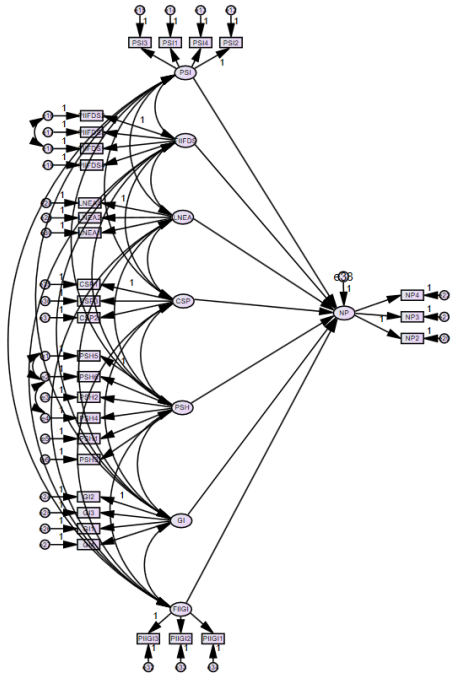

चित्र: एसईएम मॉडल

प्रतिगमन भार के साथ प्रदान किया गया एसईएम मॉडल उत्तर प्रदेश में विभिन्न कारकों और पोषण समस्याओं (एनपी) के बीच संबंधों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। अब इन प्रतिगमन भारों की व्याख्याओं का गहराई से विश्लेषण करें।

Factor Code	Factor Name	कारक का नाम
PSI	Poverty and Socioeconomic Inequality	गरीबी और सामाजिक-आर्थिक असमानता
FIIFDS	Food Insecurity and Inadequate Food Distribution Systems	खाद्य असुरक्षा और अपर्याप्त खाद्य वितरण प्रणाली
LNEA	Lack of Nutrition Education and Awareness	पोषण शिक्षा और जागरूकता की कमी
CSP	Cultural and Social Practices	सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाएं
PSH	Poor Sanitation and Hygiene	खराब स्वच्छता और स्वास्थ्यकरता
GI	Gender Inequality	लिंग असमानता
FIIGI	Food Insecurity and Inadequate Government Interventions	खाद्य असुरक्षा और अपर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप
NP	Nutrition Problems	पोषण समस्याएं

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

स्ट्रक्चरल इक्वेशन परिणामों (एसईएम) का अनुमानित मूल्य

			अनुमानित मूल्य (Estimation)	मानक त्रुटि (एस.ई.) (IE)	महत्वपूर्ण अनुपात (सी.आर.) (CR)	संभाव्यता मान (P-Value)
एनपी (NP)	<---	PSI	.014	.044	.316	.752
एनपी (NP)	<---	FIIFDS	.322	.095	3.400	*
एनपी (NP)	<---	LNEA	.166	.061	2.749	.006
एनपी (NP)	<---	CSP	-.051	.055	-.930	.353
एनपी (NP)	<---	PSH	.215	.037	5.743	*
एनपी (NP)	<---	GI	.006	.026	.228	.820
एनपी (NP)	<---	FIIGI	.290	.063	4.591	*

* 0.05 स्तर पर आधारित स्तर

यह तालिका एक पूर्वनिर्धारित मॉडल का उपयोग करके एयोध्या जिले में पोषण समस्याओं (NP) के प्रति प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण दिखाता है। यहां प्रमुख घटकों का विवरण है:

अनुमानित संख्या (Estimation): ये मान विश्लेषणात्मक प्रतिस्थापन (Estimation) का प्रभाव दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, PSI (गरीबी और सामाजिक-आर्थिक असमानता) के लिए अनुमानित संख्या 0.014 है, जिसका मतलब है कि PSI में एक इकाई की वृद्धि पोषण समस्याओं (NP) में 0.014 की वृद्धि के साथ जुड़ी है, अन्य चर को स्थिर रखकर।

मानक त्रुटि (Standard Error): यह प्रतिस्थापन की मानक विचलन को दर्शाता है। कम मान स्थिर अनुमानों की अधिक विश्वसनीयता दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, CSP (सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाएं) के लिए मानक त्रुटि 0.055 है, जिससे पाया जाता है कि अन्य चर की तुलना में अनुमान में अधिक संदेह है।

टी- मान (T-Statistic): टी- मान अनुमान की सामान्य त्रुटि का अनुपात होता है। यह निर्धारित अनुमान के मानक त्रुटि का अनुमान लगाने में सहायक होता है। एक अधिक निष्कर्ष का आयाम देता है। उदाहरण के लिए, PSH (खराब स्वच्छता और स्वास्थ्यकरता) के लिए टी- मान 5.743 है, जिसका अर्थ है कि पोषण समस्याओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

P-मूल्य (P-Value): P-मूल्य दिखाता है कि अगर शून्य निष्कर्ष होता है तो यदि विचार किया जाता है कि एक निष्कर्ष का रिश्ता दृष्टिकोण को देखा जाता है। एक प-मूल्य 0.05 से कम (सामान्य रूप से एक सीमा के रूप में उपयोग की जाती है) यह सुझाव देता है कि रिश्ता सांख्यिकीय रूप से प्रमुख है। इस विश्लेषण में, LNEA (पोषण शिक्षा और जागरूकता की कमी) के लिए प-मूल्य 0.006 है, जिसे पोषण समस्याओं में महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं के रूप में माना जाता है।

0.05 स्तर पर आधारित स्तर में विश्लेषण (Interpretation at 0.05 Level): '*' के साथ चिह्नित चर भारी मात्रा में समर्थन करते हैं कि 0.05 प्रमाणीकरण स्तर पर सार्थक रिश्ता है, इस विश्लेषण में, प्रतिस्थापन में महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं के रूप में उनकी महत्वपूर्णता को दोहराते हैं।

यह प्रेषण विश्लेषण एयोध्या जिले में पोषण समस्याओं के साथ संबंधित कई कारकों की पहचान करता है। यह गरीबी, अपर्याप्त खाद्य वितरण प्रणालियों, पोषण शिक्षा की कमी, खराब स्वच्छता और सांस्कृतिक प्रथाओं के अवश्यक योगदान को पुनः सिद्ध करता है। इस अध्ययन के परिणाम से स्पष्ट होता है कि एयोध्या जिले में पोषण समस्याओं को समाधान के लिए विभिन्न कारकों का महत्वपूर्ण योगदान है। विशेष रूप से गरीबी, अपर्याप्त खाद्य वितरण प्रणालियों, पोषण शिक्षा की कमी, खराब स्वच्छता, और सांस्कृतिक प्रथाओं का प्रभाव स्थानीय जनसंख्या के पोषण स्वास्थ्य पर होता है। इस अध्ययन ने उजागर किया कि ये चार प्रमुख कारक - PSI, LNEA, PSH, और उनके संबंधित पी-मूल्य और टी-स्थापक - पोषण समस्याओं में प्रमुख योगदानकर्ता हो सकते हैं। ये अनुसंधान नीतिनिर्माताओं को यह समझने में मदद करता है कि कैसे स्थानीय स्तर पर कार्रवाई की जाए जिससे पोषण समस्याओं का समाधान हो सके। इसके अलावा, अध्ययन ने दर्शाया कि विशेष प्रमुखता के साथ कुछ कारकों का परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण होता है, जो कि प्रतिस्थापन में अपेक्षित योगदान कर सकते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल स्थानीय स्तर पर नीतियों के विकास में मार्गदर्शन प्रदान करता है, बल्कि उसे एक प्रभावी तरीके से पोषण स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए नीतियों के प्रभाव को भी मापता है।

निष्कर्ष

अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याएँ एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है। हमारे अध्ययन का उद्देश्य इन समस्याओं के प्रमुख कारणों की पहचान करना और उनके समाधान के लिए प्रभावी नीतियाँ विकसित करना है। स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग (एसईएम) का उपयोग करके, हम विभिन्न कारकों के बीच संबंधों का गहन विश्लेषण करेंगे और पोषण संबंधी परिणामों में सुधार के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियों की सिफारिश करेंगे। हमारा विश्वास है कि यह अध्ययन अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा और राज्य के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होगा। इस अध्याय में, हम अयोध्या जिले में पोषण संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करेंगे, विशेष रूप से 2019-2021 की अवधि के लिए। हम प्रमुख डेटा स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करेंगे और मुख्य निष्कर्षों को प्रस्तुत करेंगे। स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग (एसईएम) हमारे प्रस्तावित शोध कार्य के व्यापक विश्लेषण के लिए एक महान विश्लेषणात्मक उपकरण है। शोधकर्ताओं को कई चरों के बीच जटिल संबंधों को मॉडल करने, सैद्धांतिक मॉडल का परीक्षण करने, माप त्रुटि का हिसाब

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

लगाने, मध्यस्थता और मॉडरेशन प्रभावों का आकलन करने, विविध डेटा स्रोतों को एकीकृत करने और गैर-रेखीय संबंधों पर विचार करने की अनुमति देकर, एसईएम कुपोषण के बहुमुखी निर्धारकों को समझने के लिए एक एक अच्छा मॉडल प्रदान करता है। और हस्तक्षेप और नीति निर्माण के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियों की जानकारी देना। चूंकि उत्तर प्रदेश गरीबी, खाद्य असुरक्षा, अपर्याप्त पोषण शिक्षा, सांस्कृतिक प्रथाओं, स्वच्छता, स्वच्छता और लैंगिक असमानताओं से संबंधित लगातार चुनौतियों से जूझ रहा है, एसईएम कुपोषण को दूर करने के महत्वपूर्ण कारकों का विश्लेषण करने और पोषण संबंधी परिणामों में सुधार के लिए स्थायी समाधानों को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली दृष्टिकोण प्रदान करता है।

नीतिगत सिफारिशें

हमारे अध्ययन के आधार पर, हम निम्नलिखित नीतिगत सिफारिशें प्रदान करते हैं

a) पोषण शिक्षा कार्यक्रम: व्यापक पोषण शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता है जो लोगों को संतुलित आहार और स्वास्थ्य संबंधी आदतों के बारे में जागरूक करें।
b) खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना: गरीब और जोखिमग्रस्त परिवारों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है।
c) स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुधारना: स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए नीतिगत कदम उठाने की आवश्यकता है।
d) सांस्कृतिक प्रथाओं में बदलाव: स्वास्थ्य और पोषण के प्रति सांस्कृतिक दृष्टिकोण को बदलने के लिए समुदाय-आधारित कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. **गुइटे, एन., घोष, एस., और ब्रह्मचारी, ए. (2014**) । कृषि और भूमि उपयोग के स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके सार्वजनिक पोषण के माध्यम से बच्चों में कुपोषण के मुद्दों का समाधान: उत्तर प्रदेश में क्षेत्र-आधारित मूल्यांकन अध्ययन से साक्ष्य। *इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी हेल्थ*, *26* (सप्लीमेंट 2), 237-244।

2. **श्रीवास्तव, एस., महाजन, एच., और ग्रोवर, वीएल (2013)** । उत्तर प्रदेश के जिला गौतमबुद्धनगर के शहरी क्षेत्रों में किशोर आयु वर्ग के सरकारी स्कूल के बच्चों की पोषण स्थिति। *नेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन*, *4* (01), 100-103।

3. **अली, एम., रहमान, एच., और हुसैन, एसएम (2012)।** ग्रामीण भारत में घरेलू स्तर पर खाद्य असुरक्षा की स्थिति: उत्तर प्रदेश का एक केस अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज*, *2* (8), 227-244।

4. **वीर, एससी, और मलिक, आर. (2015)** । भारत में महिलाओं की पोषण स्थिति: वर्तमान स्थिति, बाल कुपोषण पर प्रभाव और आगे की चुनौतियाँ। *स्टेट एपल*, *13* (1-2), 71-84.

5. **श्रीवास्तव, ए., महमूद, एसई, श्रीवास्तव, पीएम, श्रोत्रिय, वीपी, और कुमार, बी. (2012)** । स्कूली उम्र के बच्चों की पोषण स्थिति-भारत में शहरी मलिन बस्तियों का एक परिदृश्य। *सार्वजनिक स्वास्थ्य पुरालेख*, *70* (1), 1-8.

6**. लिटिल, टी.डी. (2024) ।** अनुदैर्ध्य संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग। गिलफोर्ड प्रकाशन।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

7. पांडे, एम., सिंह, एस., सिंह, पी., जोशी, एन., और कुमार, एम. (2024) । भारत के अयोध्या जिले में ग्रामीण और शहरी रजोनिवृत्त महिलाओं के बीच पोषण की स्थिति की तुलना। यूरोपियन जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन एंड फूड सेफ्टी, 16(6), 55-66।

8. **सिकंदर, एस., श्रीवास्तव, ए. एन., और त्रिपाठी, पी. एन. (2009) ।** उत्तर प्रदेश में आम मैना, एक्रिडोथेरेस ट्रिस्टिस में सेस्टोड परजीवियों की वर्गीकरण संबंधी जांच। जर्नल ऑफ एक्सपेरीमेंटल जूलॉजी, इंडिया, 12(1), 159-162।

9. **तिवारी, के.के. (2002)।** सोलनम मेलोंगेना एल की विभिन्न किस्मों पर बैंगन रिंग स्पॉट रोग के लक्षण और घटना। जर्नल ऑफ लिविंग वर्ल्ड, 9(1), 18-21।

10. सिंह, एस., और कालिया, पी. (2021)। फूलगोभी (ब्रैसिका ओलेरासिया वर. बोट्रीटिस एल.) प्रजनन में प्रगति, भारत पर जोर देते हुए। पादप प्रजनन रणनीतियों में प्रगति: सब्जी फसलें: खंड 10: पत्तियां, फूल के सिर, हरी फली, मशरूम और ट्रफल, 247-301।

11. मिश्रा, एस., और पांडे, एस. के. (2018)। उत्तर प्रदेश में पांच साल से कम उम्र के बच्चों में कुपोषण का मॉडलिंग: एक बहुस्तरीय दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एंड स्टैटिस्टिकल साइंसेज, 14(2)।